International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

ईरान और अमेरिका के संबंध रू एक अध्ययन

Iran–America Relations: A Study

डॉ. दिनेश कुशवाहा

सहायक प्राध्यापक (अतिथि व्याख्याता)–राजनीतिशास्त्र शा. नवीन महाविद्यालय अमोरा जिला–मुंगेली (छ.ग.)

प्रस्तावना

ईरान और अमेरिका के संबंध आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति के सबसे जटिल और विवादास्पद संबंधों में से एक हैं। 20वीं शताब्दी के मध्य तक दोनों देशों के बीच मित्रतापूर्ण संबंध थे, लेकिन 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद यह संबंध शत्रुतापूर्ण हो गए। आज भी दोनों देशों के बीच राजनीतिक, सैन्य और आर्थिक तनाव वैश्विक राजनीति को प्रभावित करता है।

ईरान मध्य–पूर्व का एक महत्वपूर्ण देश है और अमेरिका विश्व की प्रमुख महाशक्ति है। इसलिए इनके बीच होने वाले संघर्ष, समझौते और नीतियाँ वैश्विक अर्थव्यवस्था, ऊर्जा बाजार तथा क्षेत्रीय सुरक्षा पर गहरा प्रभाव डालती हैं।

1ण्ण् ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

1ण्ण् **(प्रारंभिक संबंध** 19वीं और 20वीं शताब्दी की शुरुआत में अमेरिका और ईरान के बीच अपेक्षाकृत अच्छे संबंध थे। उस समय ईरान को अमेरिका एक मित्र और सहयोगी शक्ति के रूप में देखता था। काफी अच्छे सबंध थे।

2ण्ण् **1953 का तख्तापलट** 1953 में ईरान के प्रधानमंत्री मोहम्मद मोसद्दिक को हटाने के लिए अमेरिका और ब्रिटेन ने एक गुप्त अभियान चलाया और शाह मोहम्मद रजा पहलवी को सत्ता में बनाए रखा। इस घटना ने ईरान में अमेरिका के प्रति अविश्वास पैदा किया और बाद के संघर्षों की नींव रखी।

3ण्ण् **1955 की मैत्री संधि** 1955 में दोनों देशों ने आर्थिक और कूटनीतिक संबंधों को मजबूत करने के लिए मैत्री, आर्थिक संबंध और कांसुलर अधिकार संधि पर हस्ताक्षर किए। इस समय ईरान अमेरिका का प्रमुख सहयोगी था।

2ण्ण् 1979 की इस्लामी क्रांति और संबंधों में बदलाव

1979 में ईरान में इस्लामी क्रांति हुई जिसके परिणामस्वरूप शाह की सत्ता समाप्त हो गई और आयतुल्लाह खुमैनी के नेतृत्व में इस्लामी गणराज्य की स्थापना हुई।

इसके बाद नवंबर 1979 में ईरानी छात्रों ने तेहरान में अमेरिकी दूतावास पर कब्जा कर लिया और 52 अमेरिकी नागरिकों को बंधक बना लिया। यह संकट 444 दिनों तक चला और दोनों देशों के संबंध पूरी तरह टूट गए।

1981 में अल्जीयर्स समझौते के माध्यम से बंधकों की रिहाई हुई, लेकिन राजनीतिक तनाव बना रहा।

3ण्ण् ईरान–अमेरिका संबंधों के प्रमुख विवाद

1ण्ण् **परमाणु कार्यक्रम विवाद** ईरान के परमाणु कार्यक्रम को लेकर अमेरिका और पश्चिमी देशों को संदेह है कि ईरान परमाणु हथियार विकसित करना चाहता है। 2015 में ईरान और P5+1 देशों (अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस, रूस, चीन और जर्मनी) के बीच। (**Joint Comprehensive Plan of Action**) नामक परमाणु समझौता हुआ। इस समझौते के तहत ईरान ने अपने परमाणु कार्यक्रम पर प्रतिबंध स्वीकार किए और बदले में आर्थिक प्रतिबंधों में राहत दी गई। हालांकि बाद में अमेरिका ने इस समझौते से हटकर फिर से प्रतिबंध लगा दिए।

2ण **आर्थिक प्रतिबंध** अमेरिका ने ईरान पर कई आर्थिक प्रतिबंध लगाए हैं जिनका उद्देश्य ईरान के परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्रीय प्रभाव को रोकना है। इन प्रतिबंधों के कारण ईरान की अर्थव्यवस्था, व्यापार और निवेश पर गंभीर प्रभाव पडा। शोधों के अनुसार प्रतिबंधों से ईरान की आर्थिक वृद्धि, रोजगार और निवेश में गिरावट आई है।

3ण **मध्य–पूर्व में शक्ति संघर्ष** ईरान और अमेरिका के बीच संघर्ष का एक कारण मध्य–पूर्व में प्रभाव की प्रतिस्पर्धा भी है।

- अमेरिका सऊदी अरब और इजराइल जैसे देशों का समर्थन करता है
- ईरान सीरिया, लेबनान और अन्य क्षेत्रीय समूहों का समर्थन करता है
- इससे क्षेत्र में कई अप्रत्यक्ष संघर्ष हुए हैं।

4ण हाल के घटनाक्रम

हाल के वर्षों में दोनों देशों के बीच तनाव लगातार बढता रहा है। 2025–2026 में दोनों देशों के बीच परमाणु समझौते के लिए कई वार्ताएँ हुईं, जिनका उद्देश्य क्षेत्रीय तनाव को कम करना था।
लेकिन इन वार्ताओं के बावजूद सैन्य तनाव और आर्थिक प्रतिबंधों के कारण संबंध सामान्य नहीं हो सके।

5ण वैश्विक राजनीति पर प्रभाव

ईरान–अमेरिका संबंध केवल दो देशों का मामला नहीं है बल्कि इसका प्रभाव पूरी दुनिया पर पडता है।

- **तेल और ऊर्जा बाजार** ईरान दुनिया के प्रमुख तेल उत्पादक देशों में से एक है। इसलिए इन दोनों देशों के बीच तनाव होने पर तेल की कीमतों में उतार–चढाव होता है।
- **मध्य–पूर्व की सुरक्षा** इस संघर्ष के कारण मध्य–पूर्व क्षेत्र में अस्थिरता बनी रहती है और कई देशों की सुरक्षा नीतियाँ प्रभावित होती हैं।
- **(अंतरराष्ट्रीय कूटनीति** ईरान–अमेरिका संबंध संयुक्त राष्ट्र, यूरोपीय संघ और अन्य वैश्विक संगठनों की नीतियों को भी प्रभावित करते हैं।

निष्कर्ष

ईरान और अमेरिका के संबंध इतिहास, राजनीति, धर्म और भू–राजनीति से प्रभावित जटिल संबंध हैं। 1950 के दशक में जहां दोनों देशों के बीच सहयोग था, वहीं 1979 की इस्लामी क्रांति के बाद यह संबंध शत्रुतापूर्ण हो गए।
परमाणु कार्यक्रम, आर्थिक प्रतिबंध और क्षेत्रीय शक्ति संघर्ष जैसे मुद्दों ने इन संबंधों को और जटिल बना दिया है। भविष्य में स्थायी शांति और स्थिरता के लिए दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संवाद और समझौते अत्यंत आवश्यक हैं। यदि दोनों देश सहयोग और विश्वास की दिशा में कदम उठाते हैं तो यह न केवल मध्य–पूर्व बल्कि पूरी दुनिया की स्थिरता और विकास के लिए लाभकारी होगा। ईरान और अमेरिका के संबंध आधुनिक अंतरराष्ट्रीय राजनीति का एक जटिल उदाहरण हैं। ऐतिहासिक घटनाएँ, वैचारिक मतभेद, परमाणु कार्यक्रम और क्षेत्रीय शक्ति संतुलन इन संबंधों को प्रभावित करते हैं। भविष्य में यदि दोनों देशों के बीच कूटनीतिक संवाद और समझौते बढते हैं तो मध्य–पूर्व क्षेत्र में शांति और स्थिरता स्थापित हो सकती है। इसके विपरीत यदि तनाव बढता है तो इसका प्रभाव वैश्विक राजनीति, ऊर्जा बाजार और अंतरराष्ट्रीय सुरक्षा पर पड सकता है।

संदर्भ सूची (Reference)

1. Iran–United States Relations – Wikipedia
2. International Relations Journals and Reports
3. Economic Effects of Sanctions on Iran – Research Studies

4. International Relations in the 21st Century
5. International Politics – Dr. J.C. Johari: This book is highly renowned for providing a
6. deep understanding of the subject
7. Journals, Magazines, and News
8. International Relations Journals
9. Modern International Politics Books